Gyanshauryam, International Scientific Refereed Research Journal
© 2021 GISRRJ | Volume 4 | Issue 2 | ISSN : 2582-0095

श्रवण बाधित विद्यार्थियों के मानसिक योग्यता का उनके शैक्षिक निष्पत्ति में सम्बन्ध का अध्ययन

ओम प्रकाश
असिस्टेण्ट प्रोफेसर, शिक्षा विभाग, डिर्पाटमेण्ट ऑफ स्पेशल एजुकेशन (एच.आई.)
जगद्गुरु रामभद्राचार्य दिव्यांग विश्वविद्यालय, चित्रकूट (उ0प्र0)

Article Info
Volume 4 Issue 2
Page Number : 161-170
Publication Issue :
March-April-2021
Article History
Accepted : 02 March 2021
Published : 15 March 2021

सारांश

अध्ययनकर्त्ता द्वारा श्रवण बाधित विद्यार्थियों के मानसिक योग्यता का उनके शैक्षिक निष्पत्ति में सम्बन्ध का अध्ययन किया गया है। प्रस्तुत अध्ययन में वर्णनात्मक अनुसन्धान के अन्तर्गत सर्वेक्षण विधि से पूर्ण किया गया है। जनसंख्या के रूप में चित्रकूट जनपद के माध्यमिक स्तर के विशेष विद्यालयों में अध्ययनरत् विद्यार्थियों को जनसंख्या माना गया है। प्रतिदर्श (न्यादर्श) की विभिन्न विधियों में से साधारण यादृच्छिक प्रतिदर्शन विधि को आधार बनाया गया है। तत्पश्चात् माध्यमिक स्तर के विशेष विद्यालयों में अध्ययनरत् 30 विद्यार्थियों का चयन किया गया है। प्रस्तुत शोध अध्ययन में विद्यार्थियों के बुद्धि को मापने के लिए एम.सी. जोशी, प्रोफेसर एवं विभागाध्यक्ष, मनोविज्ञान प्रयोगशाला, जोधपुर यूनिवर्सिटी, जोधपुर द्वारा निर्मित है। इस मानसिक योग्यता में सात प्रकार के प्रश्न को रखा गया है– पर्याय, विपर्याय, संख्यात्मक, वर्गीकरण, उत्तम उत्तर, तर्क एवं सादृश्य। अध्ययन में आँकड़ों के विश्लेषण हेतु कार्ल पियर्सन आघूर्ण सहसम्बन्ध गुणांक सांख्यिकी विधि का प्रयोग किया गया है। अध्ययन के निष्कर्ष में पाया – माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् श्रवण बाधित विद्यार्थियों की मानसिक योग्यता एवं उसकी विमा पर्याय, उत्तम उत्तर एवं तर्क में धनात्मक एवं सार्थक सहसम्बन्ध है जबकि विपर्याय, संख्यात्मक, वर्गीकरण एवं सादृश्य का शैक्षिक निष्पत्ति में सम्बन्ध नहीं है।

की–वड ं– श्रवण बाधित विद्यार्थी, मानसिक योग्यता, पर्याय, विपर्याय, संख्यात्मक, वर्गीकरण, उत्तम उत्तर, तर्क एवं सादृश्य, शैक्षिक निष्पत्ति, सहसम्बन्ध

मानसिक योग्यता से तात्पर्य मानसिक शक्तियों में वृद्धि होने से है इसके अन्तर्गत संवेदनशीलता, प्रत्यय निर्माण, अवलोकन, ध्यान, स्मृति, कल्पना, चिन्तन, तर्क, निर्णय, बुद्धि, भाषा, अधिगम क्षमता आदि मानसिक योग्यता के अन्तर्गत आती है। जन्म के समय शिशु का मस्तिष्क अपरिपक्व होता है। जैसे–जैसे इनकी आयु में वृद्धि होती है वैसे–वेसे उसके मस्तिष्क की योग्यता का विकास होता जाता है। परिपक्वता

Copyright: © the author(s), publisher and licensee Technoscience Academy. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution Non-Commercial License, which permits unrestricted non-commercial use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited

तथा अधिगम के फलस्वरूप बालक की मानसिक योग्यता का विकास होता है। मानसिक योग्यता उच्च, निम्न व इनके मध्य हो सकती है इसके अन्तर्गत समझने की शक्ति, स्मरण शक्ति, कल्पना करने की शक्ति तर्क करने की शक्ति तथा बुद्धि आदि विकास के शैक्षिक दृष्टि से अत्यन्त महत्वपूर्ण स्वीकार किया जाता है। यद्यपि मानसिक योग्यता के विकास की प्रक्रिया गर्भाधान के क्षण से प्रारम्भ हो जाती है तथा मृत्युपर्यन्त चलती है परन्तु शिक्षाशास्त्रियों की रुचि शैशवावस्था, बाल्यावस्था तथा किशोरावस्था में होने वाले विकास में अधिक होती है। किशोरावस्था में होने वाले विकास में अधिक होती है। किशोरावस्था में मानसिक योग्यताओं का स्वरूप लगभग निश्चित हो जाता है। किशोरों में सोचने–समझने, विचार करने तथा समस्याओं का समाधान करने की उच्च स्तरीय मानसिक योग्यताएँ विकसित हो जाती हैं, परन्तु ये प्रौढ़ों के समान उनका प्रभावी ढंग से उपयोग नहीं कर पाते हैं। ध्यान, चिन्तन, तर्क, स्मरण आदि की योग्यतायें अपनी अधिकतम सीमा को छूने लगती है। यह माना जाता है कि सोलह वर्ष की आयु तक किशोर–किशोरियों का लगभग पूर्ण मानसिक विकास हो जाता है। मानसिक योग्यता को मनोवैज्ञानिकों ने दो प्रकार का बताया है –

सामान्य मानसिक योग्यता व विशिष्ट मानिसक योग्यता।

सामान्य मानसिक योग्यता के मनोवैज्ञानिकों ने निम्न प्रकार से बताया है–

1– यह प्रत्येक व्यक्ति में कम या अधिक मात्रा में पाई जाती है।

2– यह वंशानुक्रम से भी मिलती है।

3– इसमें बहुत कम परिवर्तन सम्भव है।

4– यह व्यक्ति के भाषा, दर्शन, विज्ञान आदि विषयों में सफलता प्रदान करती है।

विशिष्ट मानसिक योग्यता :

1– यह वातावरण से अर्जित होती है।

2– यह व्यक्ति के विशिष्ट कार्यों से प्रकट होती है।

3– यह अलग–अलग व्यक्तियों में अलग–अलग प्रकार से मिलती है।

4– यह भाषा, साहित्य–सृजन, दर्शन, कला और विज्ञान में विशिष्ट स्थान दिलाती है।

छात्र–छात्राओं ने किस सीमा तक अपनी मानसिक योग्यताओं का विकास किया है, सही उसकी उपलब्धि का सूचक होता है। यदि किसी परिवार की आर्थिक स्थिति अच्छी है, भौगोलिक दशायें उपयुक्त हैं, जनसंचार साधनों की सुविधा उपलब्ध है, बच्चों के लिए पाठ्यक्रम एवं शिक्षण विधियाँ उपयुक्त हैं, विद्यालय एवं घर का वातावरण उपयुक्त है, तो उन बच्चों की शैक्षिक उपलब्धि तथा मानसिक योग्यता उच्च होगी और यदि उनकी सामाजिक–आर्थिक स्थिति, परिवार का वातावरण उपयुक्त नहीं है प्रेरणा का अभाव है, विविधस क्षेत्रों में समयोजन नहीं है या फिर माता–पित का प्रोत्साहन प्राप्त नहीं होता है, तो उन बच्चों की शैक्षिक उपलब्धि एवं मानसिक योग्यता निम्न होगी।

आनन्दमणि (2006) ने अपने अध्ययनों में पाया कि– छात्रों की सम्प्राप्ति सामान्य बुद्धि प्राप्तांक से सकारात्मक रूप से सम्बन्धित है। **त्रिपाठी, रत्नेश कुमार (2014)** ने अध्ययन में पाया कि– शहरी क्षेत्र के शासकीय एवं अशासकीय विद्यालयों में अध्ययनरत् हाईस्कूल के छात्रों की बुद्धिलब्धि में सार्थक अन्तर है। इसका प्रमुख कारण यह है कि शहरी क्षेत्र के शासकीय विद्यालयों में प्रवेश परीक्षा तथा अन्य मानदण्डों के अनुसार किया जाता है। उसके अध्यापक योग्य व प्रशिक्षण प्राप्त होते है जबकि अशासकीय विद्यालय मात्र अपने छात्र संख्या को बढ़ाने पर जोर देते हैं। **सिंह, प्रमिला (2017)** ने पाया कि– शहरी एवं ग्रामीण विद्यालयों में अध्ययनरत् विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि का उनकी बुद्धि पर कोई सकारात्मक प्रभाव नहीं

पड़ता है। **यादव, जितेन्द्र कुमार (2017)** ने अध्ययन में पाया कि किशोरावस्था में बालक–बालिकाओं के सामान्य मानसिक योग्यता के मध्यमानों में सार्थक अन्तर नहीं पाया गया अर्थात् बालक– बालिकाओं के सामान्य मानसिक योग्यता में समानता पायी गयी। किशोरावस्था के बालकों के सामान्य मानसिक योग्यता एवं समायोजन क्षमता के मध्य सार्थक सहसम्बन्ध नहीं है। जबकि दोनों के मध्य धनात्मक सहसम्बन्ध पाया गया। **शर्मा, नीरज कुमार (2017)** ने पाया कि हाईस्कूल स्तर के निम्न बुद्धि स्तर की लड़कियों में उच्च बुद्धि स्तर की लड़कियों की अपेक्षाकृत सार्थक रूप से अधिक चिन्ता है। **सिंह, प्रमिला (2017)** ने अध्ययन में पाया कि– ग्रामीण क्षेत्र के विद्यार्थियों की तुलना में शहरी क्षेत्र के विद्यार्थियों की शैक्षिक सोच, रहन–सहन, शैक्षिक विचारधारा तथा शैक्षिक सोच में कही अधिक प्रबलता पायी गयी। जबकि ग्रामीण क्षेत्र के विद्यार्थियों में पारिवारिक रहन–सहन, आवासीय व्यवस्था, विद्यालयों की दूरी आदि उनके लक्ष्यों में बाधा उत्पन्न करती है।

अतः अध्ययनकर्त्ता द्वारा अपने विषय में श्रवण बाधित विद्यार्थियों के मानसिक योग्यता का उनके शैक्षिक निष्पत्ति में सम्बन्ध का अध्ययन किया गया है।

अध्ययन का उद्देश्य–

अध्ययन में निम्नलिखित उद्देश्यों का अध्ययन किया गया है–

1. माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् श्रवण बाधित विद्यार्थियों की मानसिक योग्यता का उनके शैक्षिक निष्पत्ति में सम्बन्ध का अध्ययन करना।
2. माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् श्रवण बाधित विद्यार्थियों की पर्याय का उनके शैक्षिक निष्पत्ति में सम्बन्ध का अध्ययन करना।
3. माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् श्रवण बाधित विद्यार्थियों की विपर्याय का उनके शैक्षिक निष्पत्ति में सम्बन्ध का अध्ययन करना।
4. माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् श्रवण बाधित विद्यार्थियों की संख्यात्मक का उनके शैक्षिक निष्पत्ति में सम्बन्ध का अध्ययन करना।
5. माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् श्रवण बाधित विद्यार्थियों की वर्गीकरण का उनके शैक्षिक निष्पत्ति में सम्बन्ध का अध्ययन करना।
6. माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् श्रवण बाधित विद्यार्थियों की उत्तम उत्तर का उनके शैक्षिक निष्पत्ति में सम्बन्ध का अध्ययन करना।
7. माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् श्रवण बाधित विद्यार्थियों की तर्क का उनके शैक्षिक निष्पत्ति में सम्बन्ध का अध्ययन करना।
8. माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् श्रवण बाधित विद्यार्थियों की सादृश्य का उनके शैक्षिक निष्पत्ति में सम्बन्ध का अध्ययन करना।

परिकल्पनाएँ–

अध्ययन में निम्नलिखित शून्य परिकल्पनाओं का परीक्षण किया गया है–

1. माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् श्रवण बाधित विद्यार्थियों की मानसिक योग्यता का उनके शैक्षिक निष्पत्ति में कोई सार्थक सहसम्बन्ध नहीं है।
2. माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् श्रवण बाधित विद्यार्थियों की पर्याय का उनके शैक्षिक निष्पत्ति में कोई सार्थक सहसम्बन्ध नहीं है।

3. माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् श्रवण बाधित विद्यार्थियों की विपर्याय का उनके शैक्षिक निष्पत्ति में कोई सार्थक सहसम्बन्ध नहीं है।
4. माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् श्रवण बाधित विद्यार्थियों की संख्यात्मक का उनके शैक्षिक निष्पत्ति में कोई सार्थक सहसम्बन्ध नहीं है।
5. माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् श्रवण बाधित विद्यार्थियों की वर्गीकरण का उनके शैक्षिक निष्पत्ति में कोई सार्थक सहसम्बन्ध नहीं है।
6. माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् श्रवण बाधित विद्यार्थियों की उत्तम उत्तर का उनके शैक्षिक निष्पत्ति में कोई सार्थक सहसम्बन्ध नहीं है।
7. माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् श्रवण बाधित विद्यार्थियों की तर्क का उनके शैक्षिक निष्पत्ति में कोई सार्थक सहसम्बन्ध नहीं है।
8. माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् श्रवण बाधित विद्यार्थियों की सादृश्य का उनके शैक्षिक निष्पत्ति में कोई सार्थक सहसम्बन्ध नहीं है।

शोध प्रविधि–

प्रस्तुत अध्ययन में वर्णनात्मक अनुसन्धान के अन्तर्गत सर्वेक्षण विधि से पूर्ण किया गया है। जनसंख्या के रूप में चित्रकूट जनपद के माध्यमिक स्तर के विशेष विद्यालयों में अध्ययनरत् विद्यार्थियों को जनसंख्या माना गया है। प्रतिदर्श (न्यादर्श) की विभिन्न विधियों में से साधारण यादृच्छिक प्रतिदर्शन विधि को आधार बनाया गया है। तत्पश्चात् माध्यमिक स्तर के विशेष विद्यालयों में अध्ययनरत् 30 विद्यार्थियों का चयन किया गया है।

उपकरण–

प्रस्तुत शोध अध्ययन में विद्यार्थियों के बुद्धि को मापने के लिए एम.सी. जोशी, प्रोफेसर एवं विभागाध्यक्ष, मनोविज्ञान प्रयोगशाला, जोधपुर यूनिवर्सिटी, जोधपुर द्वारा निर्मित है।

इस मानसिक योग्यता में सात प्रकार के प्रश्न को रखा गया है–

1. पर्याय
2. विपर्याय
3. संख्यात्मक
4. वर्गीकरण
5. उत्तम उत्तर
6. तर्क
7. सादृश्य

इसमें कुल 100 प्रश्न दिये गये एवं पर्याय, विपर्याय, उत्तम–उत्तर तथा तर्क में 10–10 प्रश्न रखे गये हैं, शेष तीन संख्यात्मक, वर्गीकरण एवं सादृश्य में 20–20 प्रश्न रखे गये है।

सांख्यिकी विधियाँ–

अध्ययन में आँकड़ों के विश्लेषण हेतु कार्ल पियर्सन आघूर्ण सहसम्बन्ध गुणांक सांख्यिकी विधि का प्रयोग किया गया है।

परिकल्पनाओं का परीक्षण–

1. माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् श्रवण बाधित विद्यार्थियों की मानसिक योग्यता का उनके शैक्षिक निष्पत्ति में सम्बन्ध का अध्ययन–

H_{01} माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् श्रवण बाधित विद्यार्थियों की मानसिक योग्यता का उनके शैक्षिक निष्पत्ति में कोई सार्थक सहसम्बन्ध नहीं है।

सारणी संख्या–1

माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् श्रवण बाधित विद्यार्थियों की मानसिक योग्यता का उनके शैक्षिक निष्पत्ति के मध्य सम्बन्ध को दर्शाते सह–सम्बन्ध गुणांक

चर	N	सह–सम्बन्ध गुणांक (r)	सार्थकता स्तर
मानसिक योग्यता एवं शैक्षिक निष्पत्ति	30	0.6114	.05

सारणी संख्या–1 से स्पष्ट है कि माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् श्रवण बाधित विद्यार्थियों की मानसिक योग्यता का उनके शैक्षिक निष्पत्ति के मध्य सहसम्बन्ध गुणांक का मान 0.6114 है जो 29 स्वतंत्र्यांश के लिए 0.05 स्तर पर सार्थकता हेतु आवश्यक मान 0.355 से अधिक है। यह मान 0.05 स्तर पर सार्थक है अतः शून्य परिकल्पना अस्वीकृत की जाती है। इससे यह निष्कर्ष निकलता है माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् श्रवण बाधित विद्यार्थियों की मानसिक योग्यता का उनके शैक्षिक निष्पत्ति में धनात्मक एवं सार्थक सहसम्बन्ध है अर्थात् मानसिक योग्यता में वृद्धि होने पर शैक्षिक निष्पत्ति में वृद्धि तथा मानसिक योग्यता में कमी होने पर श्रवण बाधित विद्यार्थियों की शैक्षिक निष्पत्ति में कमी पायी गयी।

2. माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् श्रवण बाधित विद्यार्थियों की मानसिक योग्यता की विमा पर्याय का उनके शैक्षिक निष्पत्ति में सम्बन्ध का अध्ययन–

H_{02} माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् श्रवण बाधित विद्यार्थियों की मानसिक योग्यता की विमा पर्याय का उनके शैक्षिक निष्पत्ति में कोई सार्थक सहसम्बन्ध नहीं है।

सारणी संख्या–2

माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् श्रवण बाधित विद्यार्थियों की मानसिक योग्यता की विमा पर्याय का उनके शैक्षिक निष्पत्ति के मध्य सम्बन्ध को दर्शाते सह–सम्बन्ध गुणांक

चर	N	सह–सम्बन्ध गुणांक (r)	सार्थकता स्तर
मानसिक योग्यता की विमा पर्याय एवं शैक्षिक निष्पत्ति	30	0.4801	.05

सारणी संख्या–2 से स्पष्ट है कि माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् श्रवण बाधित विद्यार्थियों की मानसिक योग्यता की विमा पर्याय का उनके शैक्षिक निष्पत्ति के मध्य सहसम्बन्ध गुणांक का मान 0.4801 है जो 29 स्वतंत्र्यांश के लिए 0.05 स्तर पर सार्थकता हेतु आवश्यक मान 0.355 से अधिक है। यह मान 0.05 स्तर पर सार्थक है अतः शून्य परिकल्पना अस्वीकृत की जाती है। इससे यह निष्कर्ष निकलता है माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् श्रवण बाधित विद्यार्थियों की मानसिक योग्यता की विमा पर्याय का उनके शैक्षिक निष्पत्ति में धनात्मक एवं सार्थक सहसम्बन्ध है अर्थात् मानसिक योग्यता की विमा पर्याय में वृद्धि होने पर शैक्षिक निष्पत्ति में वृद्धि तथा मानसिक योग्यता की विमा पर्याय में कमी होने पर श्रवण बाधित विद्यार्थियों की शैक्षिक निष्पत्ति में कमी पायी गयी।

3. माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् श्रवण बाधित विद्यार्थियों की मानसिक योग्यता की विमा विपर्याय का उनके शैक्षिक निष्पत्ति में सम्बन्ध का अध्ययन–

H_{03} माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् श्रवण बाधित विद्यार्थियों की मानसिक योग्यता की विमा विपर्याय का उनके शैक्षिक निष्पत्ति में कोई सार्थक सहसम्बन्ध नहीं है।

सारणी संख्या–3

माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् श्रवण बाधित विद्यार्थियों की मानसिक योग्यता की विमा विपर्याय का उनके शैक्षिक निष्पत्ति के मध्य सम्बन्ध को दर्शाते सह–सम्बन्ध गुणांक

चर	N	सह–सम्बन्ध गुणांक (r)	सार्थकता स्तर
मानसिक योग्यता की विमा विपर्याय एवं शैक्षिक निष्पत्ति	30	0.1018	.05

सारणी संख्या–3 से स्पष्ट है कि माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् श्रवण बाधित विद्यार्थियों की मानसिक योग्यता की विमा विपर्याय का उनके शैक्षिक निष्पत्ति के मध्य सहसम्बन्ध गुणांक का मान 0.1018 है जो 29 स्वतंत्र्यांश के लिए 0.05 स्तर पर सार्थकता हेतु आवश्यक मान 0.355 से कम है। यह मान 0.05 स्तर पर असार्थक है अतः शून्य परिकल्पना स्वीकृत की जाती है। इससे यह निष्कर्ष निकलता है माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् श्रवण बाधित विद्यार्थियों की मानसिक योग्यता की विमा विपर्याय का उनके शैक्षिक निष्पत्ति में सम्बन्ध नहीं है अर्थात् मानसिक योग्यता की विमा विपर्याय में वृद्धि एवं कमी का श्रवण बाधित विद्यार्थियों के शैक्षिक निष्पत्ति वृद्धि एवं कमी नहीं होगी।

4. माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् श्रवण बाधित विद्यार्थियों की मानसिक योग्यता की विमा संख्यात्मक का उनके शैक्षिक निष्पत्ति में सम्बन्ध का अध्ययन–

H_{04} माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् श्रवण बाधित विद्यार्थियों की मानसिक योग्यता की विमा संख्यात्मक का उनके शैक्षिक निष्पत्ति में कोई सार्थक सहसम्बन्ध नहीं है।

सारणी संख्या–4

माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् श्रवण बाधित विद्यार्थियों की मानसिक योग्यता की विमा संख्यात्मक का उनके शैक्षिक निष्पत्ति के मध्य सम्बन्ध को दर्शाते सह–सम्बन्ध गुणांक

चर	N	सह–सम्बन्ध गुणांक (r)	सार्थकता स्तर
मानसिक योग्यता की विमा संख्यात्मक एवं शैक्षिक निष्पत्ति	30	0.0600	.05

सारणी संख्या–4 से स्पष्ट है कि माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् श्रवण बाधित विद्यार्थियों की मानसिक योग्यता की विमा संख्यात्मक का उनके शैक्षिक निष्पत्ति के मध्य सहसम्बन्ध गुणांक का मान 0. 0600 है जो 29 स्वतंत्र्यांश के लिए 0.05 स्तर पर सार्थकता हेतु आवश्यक मान 0.355 से कम है। यह मान 0.05 स्तर पर असार्थक है अतः शून्य परिकल्पना स्वीकृत की जाती है। इससे यह निष्कर्ष निकलता है माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् श्रवण बाधित विद्यार्थियों की मानसिक योग्यता की विमा संख्यात्मक का उनके शैक्षिक निष्पत्ति में सम्बन्ध नहीं है अर्थात् मानसिक योग्यता की विमा संख्यात्मक में वृद्धि एवं कमी का श्रवण बाधित विद्यार्थियों के शैक्षिक निष्पत्ति वृद्धि एवं कमी नहीं होगी।

5. माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् श्रवण बाधित विद्यार्थियों की मानसिक योग्यता की विमा वर्गीकरण का उनके शैक्षिक निष्पत्ति में सम्बन्ध का अध्ययन–

H_{05} माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् श्रवण बाधित विद्यार्थियों की मानसिक योग्यता की विमा वर्गीकरण का उनके शैक्षिक निष्पत्ति में कोई सार्थक सहसम्बन्ध नहीं है।

सारणी संख्या–5

माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् श्रवण बाधित विद्यार्थियों की मानसिक योग्यता की विमा वर्गीकरण का उनके शैक्षिक निष्पत्ति के मध्य सम्बन्ध को दर्शाते सह–सम्बन्ध गुणांक

चर	N	सह–सम्बन्ध गुणांक (r)	सार्थकता स्तर
मानसिक योग्यता की विमा वर्गीकरण एवं शैक्षिक निष्पत्ति	30	0.0915	.05

सारणी संख्या–5 से स्पष्ट है कि माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् श्रवण बाधित विद्यार्थियों की मानसिक योग्यता की विमा वर्गीकरण का उनके शैक्षिक निष्पत्ति के मध्य सहसम्बन्ध गुणांक का मान 0.0915 है जो 29 स्वतंत्र्यांश के लिए 0.05 स्तर पर सार्थकता हेतु आवश्यक मान 0.355 से कम है। यह मान 0.05 स्तर पर असार्थक है अतः शून्य परिकल्पना स्वीकृत की जाती है। इससे यह निष्कर्ष निकलता है माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् श्रवण बाधित विद्यार्थियों की मानसिक योग्यता की विमा वर्गीकरण का उनके शैक्षिक निष्पत्ति में सम्बन्ध नहीं है अर्थात् मानसिक योग्यता की विमा वर्गीकरण में वृद्धि एवं कमी का श्रवण बाधित विद्यार्थियों के शैक्षिक निष्पत्ति वृद्धि एवं कमी नहीं होगी।

6. माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् श्रवण बाधित विद्यार्थियों की मानसिक योग्यता की विमा उत्तम उत्तर का उनके शैक्षिक निष्पत्ति में सम्बन्ध का अध्ययन–

H_{06} माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् श्रवण बाधित विद्यार्थियों की मानसिक योग्यता की विमा उत्तम उत्तर का उनके शैक्षिक निष्पत्ति में कोई सार्थक सहसम्बन्ध नहीं है।

सारणी संख्या–6

माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् श्रवण बाधित विद्यार्थियों की मानसिक योग्यता की विमा उत्तम उत्तर का उनके शैक्षिक निष्पत्ति के मध्य सम्बन्ध को दर्शाते सह–सम्बन्ध गुणांक

चर	N	सह–सम्बन्ध गुणांक (r)	सार्थकता स्तर
मानसिक योग्यता की विमा उत्तम उत्तर एवं शैक्षिक निष्पत्ति	30	0.4327	.05

सारणी संख्या–6 से स्पष्ट है कि माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् श्रवण बाधित विद्यार्थियों की मानसिक योग्यता की विमा उत्तम उत्तर का उनके शैक्षिक निष्पत्ति के मध्य सहसम्बन्ध गुणांक का मान 0. 4327 है जो 29 स्वतंत्र्यांश के लिए 0.05 स्तर पर सार्थकता हेतु आवश्यक मान 0.355 से अधिक है। यह मान 0.05 स्तर पर सार्थक है अतः शून्य परिकल्पना अस्वीकृत की जाती है। इससे यह निष्कर्ष निकलता है माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् श्रवण बाधित विद्यार्थियों की मानसिक योग्यता की विमा उत्तम उत्तर का उनके शैक्षिक निष्पत्ति में सार्थक एवं धनात्मक सम्बन्ध है अर्थात् मानसिक योग्यता की विमा उत्तम उत्तर में वृद्धि एवं कमी का श्रवण बाधित विद्यार्थियों के शैक्षिक निष्पत्ति वृद्धि एवं कमी होगी।

7. माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् श्रवण बाधित विद्यार्थियों की मानसिक योग्यता की विमा तर्क का उनके शैक्षिक निष्पत्ति में सम्बन्ध का अध्ययन–

H_{07} माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् श्रवण बाधित विद्यार्थियों की मानसिक योग्यता की विमा तर्क का उनके शैक्षिक निष्पत्ति में कोई सार्थक सहसम्बन्ध नहीं है।

सारणी संख्या–7

माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् श्रवण बाधित विद्यार्थियों की मानसिक योग्यता की विमा तर्क का उनके शैक्षिक निष्पत्ति के मध्य सम्बन्ध को दर्शाते सह–सम्बन्ध गुणांक

चर	N	सह–सम्बन्ध गुणांक (r)	सार्थकता स्तर
मानसिक योग्यता की विमा तर्क एवं शैक्षिक निष्पत्ति	30	0.4804	.05

सारणी संख्या–7 से स्पष्ट है कि माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् श्रवण बाधित विद्यार्थियों की मानसिक योग्यता की विमा तर्क का उनके शैक्षिक निष्पत्ति के मध्य सहसम्बन्ध गुणांक का मान 0.4804 है जो 29 स्वतंत्र्यांश के लिए 0.05 स्तर पर सार्थकता हेतु आवश्यक मान 0.355 से अधिक है। यह मान 0.05 स्तर पर सार्थक है अतः शून्य परिकल्पना अस्वीकृत की जाती है। इससे यह निष्कर्ष निकलता है माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् श्रवण बाधित विद्यार्थियों की मानसिक योग्यता की विमा तर्क का उनके शैक्षिक निष्पत्ति में सार्थक एवं धनात्मक सम्बन्ध है अर्थात् मानसिक योग्यता की विमा तर्क में वृद्धि एवं कमी का श्रवण बाधित विद्यार्थियों के शैक्षिक निष्पत्ति वृद्धि एवं कमी होगी।

8. माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् श्रवण बाधित विद्यार्थियों की मानसिक योग्यता की विमा सादृश्य का उनके शैक्षिक निष्पत्ति में सम्बन्ध का अध्ययन–

H_{08} माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् श्रवण बाधित विद्यार्थियों की मानसिक योग्यता की विमा सादृश्य का उनके शैक्षिक निष्पत्ति में कोई सार्थक सहसम्बन्ध नहीं है।

सारणी संख्या–8

माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् श्रवण बाधित विद्यार्थियों की मानसिक योग्यता की विमा सादृश्य का उनके शैक्षिक निष्पत्ति के मध्य सम्बन्ध को दर्शाते सह–सम्बन्ध गुणांक

चर	N	सह–सम्बन्ध गुणांक (r)	सार्थकता स्तर
मानसिक योग्यता की विमा सादृश्य एवं शैक्षिक निष्पत्ति	30	-0.0100	.05

सारणी संख्या–8 से स्पष्ट है कि माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् श्रवण बाधित विद्यार्थियों की मानसिक योग्यता की विमा सादृश्य का उनके शैक्षिक निष्पत्ति के मध्य सहसम्बन्ध गुणांक का मान –0.0100 है जो 29 स्वतंत्र्यांश के लिए 0.05 स्तर पर सार्थकता हेतु आवश्यक मान 0.355 से कम है। यह मान 0.05 स्तर पर असार्थक है अतः शून्य परिकल्पना स्वीकृत की जाती है। इससे यह निष्कर्ष निकलता है माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् श्रवण बाधित विद्यार्थियों की मानसिक योग्यता की विमा सादृश्य का उनके शैक्षिक निष्पत्ति में सम्बन्ध नहीं है अर्थात् मानसिक योग्यता की विमा सादृश्य में वृद्धि एवं कमी का श्रवण बाधित विद्यार्थियों के शैक्षिक निष्पत्ति वृद्धि एवं कमी नहीं होगी।

निष्कर्ष–

अध्ययन में निम्नलिखित निष्कर्ष प्राप्त हुये–

- माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् श्रवण बाधित विद्यार्थियों की मानसिक योग्यता का उनके शैक्षिक निष्पत्ति में धनात्मक एवं सार्थक सहसम्बन्ध है।
- माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् श्रवण बाधित विद्यार्थियों की मानसिक योग्यता की विमा पर्याय का उनके शैक्षिक निष्पत्ति में धनात्मक एवं सार्थक सहसम्बन्ध है।
- माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् श्रवण बाधित विद्यार्थियों की मानसिक योग्यता की विमा विपर्याय का उनके शैक्षिक निष्पत्ति में सम्बन्ध नहीं है।

- माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् श्रवण बाधित विद्यार्थियों की मानसिक योग्यता की विमा संख्यात्मक का उनके शैक्षिक निष्पत्ति में सम्बन्ध नहीं है।
- माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् श्रवण बाधित विद्यार्थियों की मानसिक योग्यता की विमा वर्गीकरण का उनके शैक्षिक निष्पत्ति में सम्बन्ध नहीं है।
- माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् श्रवण बाधित विद्यार्थियों की मानसिक योग्यता की विमा उत्तम उत्तर का उनके शैक्षिक निष्पत्ति में सार्थक एवं धनात्मक सम्बन्ध है।
- माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् श्रवण बाधित विद्यार्थियों की मानसिक योग्यता की विमा तर्क का उनके शैक्षिक निष्पत्ति में सार्थक एवं धनात्मक सम्बन्ध है।
- माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् श्रवण बाधित विद्यार्थियों की मानसिक योग्यता की विमा सादृश्य का उनके शैक्षिक निष्पत्ति में सम्बन्ध नहीं है।

निष्कर्षतः माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् श्रवण बाधित विद्यार्थियों की मानसिक योग्यता एवं उसकी विमा पर्याय, उत्तम उत्तर एवं तर्क में धनात्मक एवं सार्थक सहसम्बन्ध है जबकि विपर्याय, संख्यात्मक, वर्गीकरण एवं सादृश्य का शैक्षिक निष्पत्ति में सम्बन्ध नहीं है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

- आनन्दमणि,ए. (2006). ए स्टडी ऑफ जनरल इन्टेलिजेन्स एंड इमोशनल इन्टेलिजेन्स इन रिलेशन टू एचीवमेन्ट एमंग स्टूडेन्ट्स. जनरल ऑफ एजूकेशनल स्टडीज, 4: 47–49
- त्रिपाठी, रत्नेश कुमार (2014). शासकीय एवं अशासकीय हाईस्कूल कक्षा के अध्ययनरत् छात्रों की बुद्धि, नैतिक मूल्य, समायोजन एवं शैक्षिक उपलब्धि का समीक्षात्मक अध्ययन, *इण्टरनेशनल जर्नल ऑफ एजूकेशन एण्ड साइंस रिसर्च रिव्यू*, वॉल्यूम–1, इश्शू–1, पृ0 70–82
- सिंह, प्रमिला (2017). रींवा जिले के उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् विद्यार्थियों की बुद्धि एवं शैक्षिक उपलब्धि में सहसम्बन्ध का अध्ययन, *इण्टरनेशनल जर्नल ऑफ एप्लाइड रिसर्च*, वॉल्यूम–3, इश्शू–9, पृ0 183–186
- यादव, जितेन्द्र कुमार (2017). किशोरावस्था में बालक के सावेंगिक बुद्धि, सामान्य मानसिक योग्यता एवं समायोजन क्षमता का तुलनात्मक अध्ययन, लघु शोध प्रबन्ध, वीर बहादुर सिंह पूर्वान्चल विश्वविद्यालय, जौनपुर।
- शर्मा, नीरज कुमार (2017). हाईस्कूल स्तर के विद्यार्थियों की चिन्ता का बुद्धि, लिंग एवं आवास के सन्दर्भ में तुलनात्मक अध्ययन, *नार्थ एशियन इन्टरनेशनल रिसर्च जर्नल ऑफ मल्टीडिसिप्लिनरी*, वॉल्यूम–3, इश्शू–9, पृ0 80–90
- सिंह, प्रमिला (2017). रींवा जिले के उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् शहरी एवं ग्रामीण विद्यार्थियों की बुद्धि का समीक्षात्मक अध्ययन, *इण्टरनेशनल जर्नल ऑफ मल्टीडिसिप्लिनरी एजुकेशन एण्ड रिसर्च*, वॉल्यूम–2, इश्शू–4, पृ0 81–84